Lecture series :- 95
Date :- 31/07/2020

3) Anomique Suicide :- आत्महत्या का यह प्रकार समाज की उस दशा से संबंधित है जिसे दुर्खीम ने विसंगति अथवा Anomie कहा है। विसंगति को परिभाषित करते हुए दुर्खीम ने लिखा कि "विसंगति आदर्श नियमों की समाप्ति की दशा है, एक सामान्य शून्यता है, नियमों का निलम्बन है तथा यह एक ऐसी स्थिति है जिसे हम अक्सर नियमहीनता कहते हैं।" इसका तात्पर्य है कि जब किन्हीं आकस्मिक दशाओं के फलस्वरूप समाज का संगठन तथा उसका नैतिक संतुलन बिगड़ जाता है और व्यक्ति इन बदली हुई दशाओं से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते तब यह दशा विसंगति की दशा होती है। यही कारण है कि इस स्थिति में भी

Scanned with CamScanner

जाने वाली आत्महत्या को हम विसंगतिपूर्ण अथवा नियमहीनता से उत्पन्न आत्महत्या कहते हैं। सोरोकिन ने आत्महत्या के इस रूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "जब किसी समाज के मूल्यों और आदर्श नियमों की व्यवस्था को आघात पहुँचता है तथा वह छिन्न-भिन्न हो जाती है तो विसंगति आत्महत्यों की दर स्वयं ही ऊपर की ओर उठने लगती है।" उदाहरण के लिए किसी समाज में आर्थिक संकट की दशा उत्पन्न हो जाने पर अथवा तीव्र राजनीतिक उथल-पुथल होने की दशा में समाज में न केवल आदर्श नियमों का प्रभाव समाप्त होने लगता है बल्कि बहुत से व्यक्ति अपने जीवन में एक शून्यता महसूस करने लगते हैं। इसका स्वाभाविक परिणाम बहुत से व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के रूप में देखने को मिलता है। भारत में 1990 में आरक्षण की नीति को लेकर जिस अप्रतिमानता को प्रोत्साहन मिला उससे संबंधित एक बड़ी संख्या में होने वाली आत्महत्याएँ विसंगत आत्महत्या की दशा को ही स्पष्ट करती हैं। इस संदर्भ में दुर्खीम ने पारिवारिक विसंगति का भी उल्लेख करते हुए बताया कि परिवार में यदि पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार का संगठन नष्ट हो जाए तो दूसरे पक्ष द्वारा की जाने वाली आत्महत्या भी विसंगत आत्महत्या की प्रकृति को ही स्पष्ट करती है। वास्तविकता यह है कि समाज में विसंगति अथवा नियमहीनता के कारण अनेक व्यक्ति अपनी दशाओं में सामंजस्य स्थापित करने में पूर्णतया असफल हो जाते हैं और इसलिए आत्महत्या के द्वारा इस संकट

Scanned with CamScanner

से स्वयं को बचाने का प्रयत्न करते हैं।

इस प्रकार दुर्खीम ने आत्महत्या को एक सामाजिक घटना मानकर सामाजिक दशाओं के संदर्भ में ही आत्महत्या की प्रकृति तथा दर को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि दुर्खीम ने आत्महत्या की गतिशील प्रकृति को स्पष्ट करके तथा इसे सामाजिक दशाओं का परिणाम सिद्ध करके समाजशास्त्रीय चिंतन में एक महत्वपूर्ण योगदान किया है लेकिन कुछ आधारों पर दुर्खीम के आत्महत्या के सिद्धांत की आलोचना भी की जाती है। Aron ने लिखा है कि दुर्खीम के इस सिद्धांत का सबसे बड़ा दोष यह है कि उन्होंने आत्महत्या की विवेचना में सामाजिक कारकों के प्रभाव पर आवश्यकता से अधिक बल दे दिया है। वास्तविकता यह है कि व्यक्ति की मानसिक संरचना अथवा व्यक्तित्व संबंधी कारक भी आत्महत्या जैसी घटना के लिए एक बड़ी सीमा तक उत्तरदायी होते हैं। दुर्खीम ने इस तथ्य की पूर्णतया अवहेलना कर दी जिसके फलस्वरूप उनके विचार एकपक्षीय प्रतीत होने लगते हैं।